भावार्थ

पाठ 2 – राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

कक्षा 10 हिंदी अ (क्षितिज) – पद्य खंड

काव्यांशों का भावार्थ

काव्यांश 1

नाथ संधधुववु भंजनिहारा। होइहिं केउ एक दास तुम्हारा।।
आयसु कहिं करिअे चित नाहीं। सुनि रिसाइ बोले मुनि लहीं।।
सेवकु सो जो सेवकाई। अरिकरनी करि क्रोधद्धिं मलई।।
सुनहु राम जेहिं सिबधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ।।
सो सिवधानु हिह्य समाना। तब मारे जेहिं सहज जाना।।
सुनि सुनिवचन बचन मुसुकानी बोले परशुरामहिं अभिमानी।
बहु धनुही तोरी लरिकाई। कहर्डुं न असि रिस्स कीहिं गोंसाई ।।
सोई धनु पर ममता कीहिं हेतू। सुनि रिसाइ कह मुनुकुपकेंन्तु ।।

दोहा

रे तपबालक कालबस बोलत मोहिं न संझारा।
धनुहिं सब विथुरारिथनु जिदित सकल संसारा।।

भावार्थ

परशुराम के क्रोध को देखकर जब जनक के दरबार में सभी लोग भयभीत हो गए तो श्रीराम ने परशुराम को संवोधित करते हुए आगे बढ़कर कहा–हे नाथ! भगवान शिव के धनुष को तोड़ना वाला आपको कोई दास नहीं। आप बताइए कि क्या आज्ञा है, आप मुझसे क्या नहीं कहते? राम के यह वचन सुनकर क्रोधित परशुराम बोले–सुनुन का होता है, जो सेवा का कार्य करता है। धनुष का काम करने वाले से लड़ाई ही करनी चाहिए।

हे राम! जिसने भगवान शिव जी के इस धनुष को तोड़ा हैं, वह सहसबाहु के समान ही मेरा शत्रु है। वह इस समान (धनुष) को देखकर तुरंत आया है, जाए, नहीं तो यहों उपस्थित सभी राजा मारे जाएंगे। परशुराम के इन क्रोधपूर्ण वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी मुसुकुराए और परशुराम का अपमान करते हुए बोले–हे स्वामी! बचपन में हमने ऐसे छोटे-छोटे बहुत-से धनुष तोड़ डाले थे, किन्तु आपने ऐसा क्रोध तो कभी नहीं किया। आपका इसी धनुष पर इतना ममता किस कारण से है?

लक्ष्मण की व्यंग्य भरी बातें सुनकर परशुराम क्रोधित स्वर में बोले–अरे राजकुमार! प्रसाद के वश में होसे से बड़े भी ओ भोवा नहीं कि वव क्या बोल रहा है? तू संयम कर नहीं बोल पा रहा है। तुम्हें समर सयेत में उपस्थित भगवान शिव का यह धनुष क्या तुम्हें बचपन में तोड़े हुए धनुषों के समान ही दिखाई देता है?

भावार्थ

पाठ 2 – राम लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

कक्षा 10 हिंदी अ (क्षितिज) – पद खंड

काव्यांश 2

लखवन कहा हसि हमारे जाना। सुनहु देव सब धनुष सम्माना।।
का छनि लाय जन धनु तोरे। देखा राम नयन के औरे।।
छूअत टूट रघुपतिहु न दोषा। सुनि बिनु कान करिअ करत रोषा।।
बोले तिस परसु की औरा। रे छूड़ सुनहि सुहावन न मोरा।।
बालक बोले बधु नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियनुल द्रोही।।
भजलन भूमि भूष बिन कीन्ही। विप्रवर बार मतिअउक दीन्ही।।
सहस्रबहुजन छेदेहिररा। परसु बिलोकु महींएकवारा।।

दोहा

मातु पिताहि जनि सोवयम करसि महींमकिसोरा।
गर्वन्कू के अंकंक दम्मन परसु मोर अति घोरा।।

भावार्थ

लक्ष्मण ने हँसकर परशुराम से बोले-हे देव! सुनिए, हमारे लिए तो सभी धनुष एक समान ही होते हैं।
लक्ष्मण श्रीराम की ओर देखकर बोले-इस धनुष के टूटने से क्या लाभ है और क्या हानि, यह बात मेरी समझ में नहीं आई है।
श्रीरामचन्द्र ने तो इसे केवल छुआ था, लेकिन यह धनुष तो टूटने ही टूट गया।
फिर इसमें रघुकुल के स्वामी श्रीराम का क्या दोष हैं? हे मुनिवर! आप तो बिना किसी के क्रोध कर रहे हैं?

लक्ष्मण की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम का क्रोध और बढ़ गया और
वह अपने फरसे की ओर देखकर बोले-अरे छूट्टट क्या तुम मेरे स्वभाव के विषय में नहीं जानते? मैं तुम्हें बालक समझकर नहीं मार रहा हूँ।
अरे मूर्ख! क्या तू मुझे निंदा पूर्वक समझता है? मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति हूँ।
मैं पूरे विश्व में क्षत्रिय कुल के चौर शत्रु के रूप में विख्यात हूँ। मैंने अपनी इनहीं भुजाओं के बल से पूथ्वी को कई बार राजाओं से रहित करके उसे ब्राह्मणों को दोन ग़ुसे फसी थी मेर इस फुरसे को देख, जिससे मैंने सहस्बह की भुजओं कोक्ाट डाला था।
और राजा के बालक लक्ष्मण! तू मुझसे भिड़कर अपने माता-पिता को चिंता में मत डालल। अपनी मौत न बुला।
मेरा फरसा बहुत अभेयंकर हैं। यह अभी मर्वीं वदो हुवां भी वबाश कर डाललता हँ। यह छोदे बी भीरतहा हैं करता।

Online Teaching With Nikita

भावार्थ

पाठ 2 - राम लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

कक्षा 10 हिंदी अ (क्षितिज) - पद खंड

काव्यांश 3

बिहांसि लखन बोले प्रयु बानी। अहो मुनिसु महाभट मानी ।।
सुनि सुनि मोहिर देखाव कुउर। यहत उड़ावन फेंकि फुहार ।।
इहाँ कुम्मडबान्ति कोउ नाहीं। जे तरजनि देखि मारे जाहीं ।।
देखि कठोर सरासन वाराणा। मैं कहु कहा सहित अभिमाना ।।
भगुसूत समुझि जन्‍उ बिलोकी। जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी ।।
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमारे कुल इन्हँ पर न सुराई ।।
बसै पापु अपकरिति हारे। मारतहु पर परिाज्ञ तुम्हारे ।।
कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बान कुआरा ।।

दोहा

जो बिलोकि अनुम्चित कहउँ छमहु महामुनि धीरा।
सुनि स़रोष भगुंस़समनि बोले गिरा गंभीरा ।।

भावार्थ

परशुराम के क्रोधित वचनों को सुनकर लक्ष्मण अत्यंत कोमल वाणी में हँसकर बोले- अहो मुनिवर! आप तो अपने आप को बहुत बड़ा योद्धा समझते हैं और बार-बार मुझे फुरसा दिखाते हैं। मुनि तो ऐसा लगता है कि आप फूल से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं, परंतु मुनिवर! यहाँ पर कोई भी कुम्हड़ें के छोटे फल के समान नहीं है, जो तर्जनी उंगली को देखते ही मर जाएं। मुनि जी! मैंने आपके हाथ में फर्सा और धनुष-बाण देखकर ही अभिमानपूर्वक आपको कुछ कहा था। मैं आपको भगुवंशी समझकर और आपके क्रोध पर जाकर देखकर अपने क्रोध को सहन कर रहा हूँ।

हे मुनिवर! हमारे कुल की यह परंपरा है कि हम देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय, इन सभी पर वार नहीं दिखाया करते, क्योंकि इन्हें मारने से पाप लगता है और इनसे हार जाने पर अपकीर्ति होती है। इसलिए यदि आप मुझे मार भी दें तो भी मैं आपके पैर ही पड़ूँगा। हे महामुनि! आपका तो एक-एक वचन ही करोड़ों वज़्रों के समान कठोर है। आपने व्यर्थ में हीं फर्सा और धनुष धारण किया हुआ है।
यदि मैंने आपको देखकर कुछ गलत कह दिया हो, तो हे धैर्यवान महामुनि! मुझे क्षमा कर दीजिएगा।
लक्ष्मण के यह व्यंग्य-वचन सुनकर भगुवंशी परशुराम क्रोध में आकर गंभीर वाणी में बोलने लगे।

हिंदी
क्षितिज
पद खंड
कक्षा 10

Online Teaching With Nikita

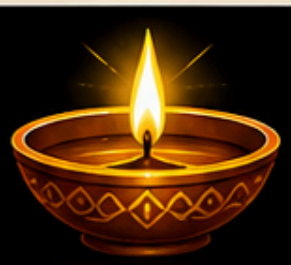

भावार्थ

पाठ 2 – राम लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

कक्षा 10 हिंदी अ (क्षितिज) – पद खंड

काव्यांश 4

कोसिक सुनहु मंद येहु बालक। कटिलु कालबस निज कुल चालक।।
भानुबंस राकेस कलंकुं। निपट निरंकुसु अबुधु असंक।।
कालकस्दु होइहि छन नाहीं। कहाँ पुकारि खोर मोहि नाहीं।।
तुम्ह हटकहिं हमो सहहि उर मारी। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारी।।
लखन कहेउँ मुनि सुज्रसु तुम्हारा। तुम्हहिं अधज को बरसे पारा।।
अपने मुलु तुम्हं आपन्नि करनी। बार अनेक भांति बहु बरनी।।
नहि संतोषु त पनि कहु। जनि रिस रोकि दुसह दुखं सहहु।।
बीरसती तुम्हें धीर अछोभा। जारी देत न पावहु शोभा।।

दोहा

सुर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।
विदयमान रज पाई रिपु कायर कवहु प्रतापु।।

भावार्थ

परशुराम को लक्ष्मण की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर और क्रोध आ गया और वह राम और लक्ष्मण के गु विश्वामित्र से बोले-हे विश्वामित्र! सुनो यह बालक (लक्ष्मण) बहुत कुवुद्धि और कुटिल हैं। यह काल (मृत्यु) के वश में आकर

अपने कुल का धातक बन रहा है। यह सूर्यवंशी बालक चंद्रमा पर लगे हुए कलंक हैं। मुझे यह पुरी तरह उद्दंड, मूर्ख और निडर लगता हैं। अभी यह क्षणभर में काल का ग्रास हो जाएगा अर्थात् मैं क्षणभर में इसे मार डालूंगा। मैं से यह बात कह रहा हूँ। बाद में मुझे दोष मत दीजिएगा। यदि आप इसे बचाना चाहते हैं, तो इसे मेरे प्रताप, बल और क्रोध के विषय में बतलाकर अभी बोलने से मना कर दीजिए।

लक्ष्मण इतने पर भी नहीं माने और परशुराम को क्रोध दिलाते हुए बोले-हे मुनिवर! आपका सुयर आपके रहते हुए दूसरा कौन वर्णन कर सकता है? आप तो अपने हीं मुंह से अपनी करनी और अपने विषय में अनेक बार अनेक प्रकार से वर्णन कर चुके हैं। यदि इतना तो के कुइ सब कुछ कहने के बाद भी आपको संतोष नहीं हुआ हो, और कह दीजिए। अपने क्रोध को रोककर असह्य दुःख को सहन मत कीजिए। आप वीरता का व्रत धारण करने वाले, धैर्यवान और क्षोभरहित हैं, आपको गाली देना शोभा नहीं देता।

जो शूरवीर होते हैं, वे अपनी वीरता प्रदय नहीं दिखाते हैं, वे बातों से अपना वर्णन नहीं करते! शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर भी अपने प्रताप की व्यर्थ बातें करने वाला कायर ही हो सकता हैं।

Online Teaching With Nikita

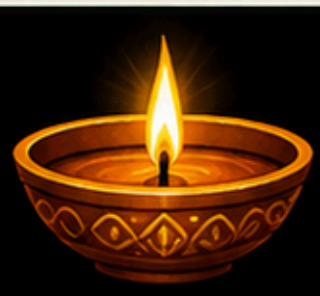

भावार्थ

पाठ 2 – राम लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

कक्षा 10 हिंदी अ (क्षितिज) – पद खंड

काव्यांश 5

तुम्ह तो कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा।।
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु मुधारि धरेर कर घोरा।।
अब जनि देउ दोसु मोहि लोगा। बदबाते बालक बड़भ्गु।।
बाल बिलोकि कह्हु मैं बौरा। अब येह मरबिहार भा सांदा।।
कोसिक कहा छमिअ अपारथ। बाल दोष गुन गनहिं न साधू।।
खर कठोर में अकड़न कोही। आगे अपारथी गुरुद्रोही।।
उत्तर देत छोड़ी बिब्स मारे। केवल कोसिक सील तुम्हारे।।
न त येहि कोटि कुठोर कठोरे। गुरहि उरिन होटोहें श्रम थोरे।।

दोहा

गाधिसूत कह हदय हरि मुनिहि हरियरे सूझ।
अपम्म्य खाँड़ न उयख्मम अन्दुं न बझ्झ प्रस्दूझ ।

भावार्थ

लक्ष्मण परशुराम से बोले–मुझे ऐसा लग रहा है मानो आप काल को हॉक (आज्ञा) लगाकर बार–बार उसे मेरे लिए बुला रहे हों। लक्ष्मण जी के ऐसे कठोर वचन सुनते ही परशुराम का क्रोध और बढ़ गया। उन्होंने अपने भयानक फरसे को घुमाकर अपने हाथ में ले लिया और बोले–अब लोग मुझे दोष न दें। इतने बढ़न वचन बोलने वाला यह बालक मारे जाने योग्य हैं। बालक देखकर इसे मैंने बहुत बचाया, पर अब यह समुद्र मरने वाला है।

परशुराम के क्रोध को देखकर विश्वामित्र उठ खड़े हुए और बोले–अपराध क्षमा कोजिए। बालकों के दोष और को गुण साधु लोग नहीं गिना करते। तब परशुराम ने कहा साधु कि ये मेरा टुट फरसा है, मैं स्वयं दयारहित और क्रोधी हूँ, उस पर यह गुरुद्रोही मेरे सामने उत्तर दिए जा रहा है।

हे विश्वामित्र! केवल आपके शील के कारण ही मैं इसे मारे बिना छोड़ रहा हूँ, नहीं तो इसे इस कठोर फरसे से काटकर थोड़े ही परिश्रम से गुरु के ऋण से मुक्त्त हो जाता।

परशुराम के बचन सुनकर विश्वामित्र ने मन ही मन हँसकर सोचा–मनि परशुराम को हरा–ही–हरा सुझ रहा है अर्थात चारों और विक्ष्यी होने के कारण ये राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं। मुनि अब भी नहीं समझ रहे हैं कि ये दोनों बालक लोभे की बनी हुई तलवार हैं, गन्ने के रस की नहीं, जो मुंह में लेते ही गल जाएं अर्थात राम–लक्ष्मण साधारण वीर न होकर बहुत पराक्रमी क्षत्रिय योद्धा हैं। मुनि परशुराम जी अगनिवयों की तरह इनके प्रभाव को समझ नहीं पा रहे हैं।

Online Teaching With Nikita

भावार्थ

पाठ 2 - राम लक्ष्मण-परशुराम संवाद (तुलसीदास)

कक्षा 10 हिंदी अ (क्षितिज) - पद खंड

काव्यांश 6

कहैउ लखन मुनि सील तुम्हारा। को नहिं जान विदित संसारा।।
माता पिताहि उरिन भयों नौकें। गुररिनु रहा सोच् बड़ जो के ।।
सो जनु हमोररे माथें कादा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाला ।।
अब आजिअ दयावारिधा तोही। तारत देउ में थैली खोही ।।
सुनि भद् बचन कठोर सुप्हारा। हाय हाय सब सभा पुकारा ।।
भुगुबर परसु देखाबहु मोही। बिप्र विचारि बचगें मुपद्द्रोंही ।।
मिल्ले न कबई सुभट रबु गाहेः। दपडजदेदता धरहि के बांदो ।।
अनुचित कहि सबु लोग पुकारे। रघुपति सथमवहि लखनु नेवारे ।।

दोहा

लखण उत्तर जहिति सरिस भुगुकुलकोपें कुसानु।
बदन देखि जन सम बचन बोले रघुकुलभानु।।

भावार्थ

लक्ष्मण ने परशुराम से कहा- हे मुनि! आपके शील स्वभाव के बारे में कौन नहीं जानता? वह सम्पूर्ण संसार से प्रसिद्ध हैं। आप माता-पिता के क्रण से तो घुडांठी तरह मुत्त हो गए। अब केवल गुरु का क्रण शेथ रह गया है, जिसका आपके जी पर बड़ा बोझ हैं। शायद यह क्रण हमारे ही माथे पर था। दतेनते दिज्ञ हैं। खुस्ल तनाहे। हायमये पर था। बहुत दिन बीत गए, इस पर दया भी बहुत यह गया होगा। अब किसी हिसाब करने वाले को बुला लीजिए। मैं में तुंरत ही थैली खोलकर सारा क्रण चुकगरि दे देता हूँ। लक्ष्मण के कदु परशुराम ने अपना फरसां संभानातो सीास्मि हायन्व वत्क सन्क्तेने लमी।

लक्ष्मण बोले- हे भुगुवेशल! आप मुझे फसा दिखा रहे हैं, पर हे राजाओं के शह!
मैं आपको समझंकर आपकी वचा रहा हुं। मुझे लगता है आपको कभी युद्ध के मैदान में वीर योद्धा नहीं मिले हैं।
हे ब्राह्मण देवता! आप घर में ही अपनी वीरता के कारण फूल-फूले फिर रहे हैं अर्थात अत्यधिक खुश हो रहे हैं।

लक्ष्मण के ऐसे वचन सुनकर सभा में उपस्थित सभी लोग यह अनुचित है, यह अनुचित हैं कहकर पुकारने लगे। यह देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण को आँखों के इशारे से रोक दिया।

लक्ष्मण के उत्तर परशुराम की कोमगतित में आहुति के समान कार्य कर रहे थे। इस कोमगति को बढ़ते देख रघुवंशी सूर्य राम, लक्ष्मण के वचनों के विपरीत, जल के समान शांत करने वाले वचनों का प्रयोग करते हुए परशुराम जी से लक्ष्मण को क्षमा करनें की विनती करने लगे।